सरकार ने घर पर मास्क बनाने का तरीका बताया

घर पर आसानी से मिलने वाले कपड़ों से बनेगा मास्क

वायरस के प्रसार को रोकने में 70 प्रतिशत तक कारगर

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय की तरफ से लोगों को घर पर मास्क बनाने का तरीका बताया गया है। एक मैनुअल जारी कर लोगों को पुरानी बनियान, टी-शर्ट और रुमाल की मदद से प्रभावी मास्क बनाने की जानकारी दी गई है। यह मास्क वायरस के प्रसार को 70 प्रतिशत तक रोकने में कारगर है।

कोरोना के प्रसार को रोकने की दिशा में सरकार लगातार लोगों को यह संदेश दे रही है कि मास्क लगाकर रखें। मास्क लगाए रहने से किसी संक्रमित की छींक या खांसी से हवा में फैले वायरस को अपनी सांस तक पहुंचने से रोकना संभव है। विशेष रूप से भीड़भाड़ वाली जगहों पर रहने वालों को अनिवार्य तौर पर मास्क लगाना चाहिए। मैनुअल में कहा गया है कि मास्क को नियमित तौर पर पानी, साबुन और एल्कोहल आदि से साफ करते रहना चाहिए। मैनुअल के मुताबिक, '100 प्रतिशत कॉटन के कपड़े की दो परत बेहद छोटे कणों को रोकने में सर्जिकल मास्क की तुलना में 70 प्रतिशत तक कारगर है। इससे आसानी से सांस ली जा सकती है और ऐसे कपड़े आसानी से घरों में मिल भी जाते हैं। ऐसे मास्क का दोबारा प्रयोग करना भी संभव है।' इस मैनुअल का उद्देश्य है कि विभिन्न एनजीओ व व्यक्तिगत रूप से भी लोग मास्क बना सकें और लोगों में मास्क लगाने की आदत बने। एक विश्लेषण के मुताबिक, अगर 50 प्रतिशत लोग मास्क लगाकर रहें तो केवल 50 प्रतिशत लोग ही वायरस से सुरक्षित रह सकते हैं। वहीं अगर 80 प्रतिशत लोग मास्क लगाने लगें तो वायरस के संक्रमण की कड़ी को तुरंत रोका जा सकता है।

प्रतीकात्मक

बरतें सावधानी

मास्क बनाने से पहले कपड़े को अच्छी तरह धोएं और कम से कम पांच मिनट उबालें। उबालते समय पानी में नमक भी डाल लें। मास्क को रोजाना धोना और पानी में उबालना चाहिए। बिना साफ किए मास्क को दोबारा इस्तेमाल करने से संक्रमण का खतरा रहता है।

लॉकडाउन में बोरियत दूर करने के लिए ना लें तंबाकू-शराब का सहारा

नशा करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है कम

अंदर से मजबूत व्यक्ति का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा कोरोना

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बीच स्वास्थ्य मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि लॉकडाउन में बोरियत दूर करने के लिए तंबाकू और शराब जैसे नशीले पदार्थों का इस्तेमाल ना करें। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता तो कम हो ही सकती है मानसिक सेहत भी बिगड़ सकती है।

मंत्रालय ने लोगों से यह भी आग्रह किया है कि संक्रमण से प्रभावित लोगों के साथ अछूत जैसा बर्ताव नहीं करें। मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया है, 'अगर आपको लगता है कोई व्यक्ति संक्रमित है तो उसे एहतियात बरतने की सलाह दें और जरूरी हो तो मेडिकल सहायता लेने के तौर तरीके बताएं।'

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि जिसे नशे की लत है, उसे अवसाद की स्थिति में पेशेवरों की मदद लेनी चाहिए। लॉकडाउन की अहमियत का उल्लेख करते हुए मंत्रालय ने कहा है कि इसका फैसला इसलिए किया गया है ताकि वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में न फैले और हमारी और दूसरों की इससे रक्षा हो। इसका मतलब है कि आवश्यक सामान की खरीदारी करने के लिए ही घरों से बाहर निकलें। कम से कम बाहर निकलें और जरूरी काम होने पर परिवार का कोई स्वस्थ सदस्य ही बाहर जाए।

मंत्रालय ने कहा है कि कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद भी डरने की जरूरत नहीं है। ज्यादातर संक्रमित लोग पूरी तरह से ठीक हो जाते हैं। खुद को आइसोलेशन में रखें और डॉक्टर द्वारा दी गई दवा लेते रहें।

यह भी कहा गया है कि हर वक्त इस तरह की बातें नहीं करें कि हम बीमार पड़ जाएंगे। बल्कि उनके बारे में जानकारी हासिल करें जो संक्रमण से पूरी तरह से स्वस्थ हो चुके हैं।

1918 की तरह कोरोना वायरस से मुकाबला करेगा देश

जागरण संवाददाता, अलीगढ़

102 साल पहले स्पेनिश फ्लू से हुई थी भारत में दो करोड़ लोगों की मौत

दुनिया के कोने-कोने में फैले कोरोना वायरस से लोग भयभीत हैं। हजारों लोग जान गंवा चुके हैं। कोरोना वायरस के संक्रमण से सामाजिक ढांचे में बदलाव की भी खबरें आने लगी हैं। वहीं, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के समाज विज्ञानियों ने कहा है कि भारत का सामाजिक ढांचा बहुत मजबूत है। कोरोना वायरस इसकी जड़ भी नहीं हिला सकता। कोरोना से देश उसी तरह मुकाबला करेगा, जैसे 1918 में स्पेनिश फ्लू से किया था। तब भारत में करीब दो करोड़ लोगों की मौत हुई थी।

एएमयू के समाज शास्त्र विभाग में चेयरमैन प्रो. अब्दुल वहीद के अनुसार, 70 फीसद हिंदुस्तान गांवों में बसता है। वहां लॉकडाउन का ज्यादा असर नहीं है। गांव के लोग इस बात का भी ख्याल रखते हैं कि बाहर का आदमी न आने पाए। खेती के साथ जानवरों का भी ख्याल रखते हैं। फसल काटने का भी समय आ गया है। छोटे शहरों में इसका असर ज्यादा नहीं होगा। बड़े शहरों में अधिक परेशानी है, लेकिन देश में सामाजिक समस्या आने वाली नहीं है। 1918 से 1920 में स्पेनिश फ्लू का संक्रमण हुआ था। तब देश में दो करोड़ लोग मारे गए थे। संक्रमण का कारण प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होकर विदेश से लौटे सैनिकों को माना गया था। तब आजादी का आंदोलन भी चरम पर था, लेकिन सबकुछ सामान्य हो गया। कोरोना के संकट से भी भारत निकल जाएगा। संक्रमण से बचने के लिए आज भले ही हम शारीरिक दूरी के नियम का पालन कर रहे हैं। इस संकट से निकलने बाद बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद लेने व गले मिलने की परंपरा फिर भी कायम रहेगी। एएमयू के ही समाजशास्त्र विभाग में प्रोफेसर मोहम्मद अकरम भी यही मानते हैं। उनका कहना है कि कोरोना वायरस हमारे सामाजिक ढांचे को कमजोर नहीं कर सकता। समाज परिवार का ही एक रूप होता है, वो ऐसे ही कायम रहेगा।

मुंबई के आसपास खड़े जहाजों पर भी बनेंगे क्वारंटाइन वार्ड

राज्य ब्यूरो, मुंबई

महाराष्ट्र में कोरोना रोगियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए किया गया फैसला

मुंबई महानगरपालिका आयुक्त ने शहर की खाली पड़ी इमारतों एवं सार्वजनिक स्थलों के साथ-साथ मुंबई के आसपास खड़े पानी के जहाजों को भी क्वारंटाइन वार्ड बनाने के लिए अधिग्रहण करने का निर्णय लिया है। यह फैसला महाराष्ट्र में कोरोना रोगियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए किया गया है। महाराष्ट्र में 24 घंटे में कोरोना के 77 नए रोगियों की पहचान हुई है। इनमें 59 मुंबई के हैं।

मुंबई मनपा आयुक्त प्रवीण परदेशी ने महानगरपालिका के सभी वार्डों के सहायक आयुक्तों को आदेश दिए हैं कि वे अपने क्षेत्रों में खाली पड़ी इमारतों, लॉज, होटल, धर्मशाला, क्लब, प्रदर्शनी केंद्र, कॉलेज, हॉस्टल, डॉरमेट्री, जिमखाना, बैंक्वेट हॉल, शादी के हॉल सहित समुद्र में खड़े पोत एवं अन्य निजी जहाजों का भी तत्काल प्रभाव से अधिग्रहण कर लें। आवश्यकता पड़ने पर इन सारे स्थानों का उपयोग उन लोगों के लिए क्वारंटाइन वार्ड बनाने के लिए किया जाए, जो किसी कोविड-19 संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आए हैं, लेकिन अभी उनमें इसके लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं।

इन स्थानों पर भोजन एवं अन्य जरूरी सामान की आपूर्ति भी मनपा सहायक आयुक्तों के जिम्मे ही होगी। यह कदम अत्यंत घनी आबादी में रह रहे लोगों में इस बीमारी का प्रसार रोकने के लिए उठाया गया है।

बता दें कि महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटों के अंदर ही 77 नए रोगियों की पहचान होने से राज्य में कोरोना पीड़ितों की संख्या 302 पर पहुंच गई है। अचानक बढ़ी संख्या ने राज्य प्रशासन को चिंता में डाल दिया है।

अमेरिका ने विकसित किया सस्ता वेंटिलेटर

ह्यूस्टन, प्रेट्र : अमेरिका में कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच टेक्सास विश्वविद्यालय ने एक स्वचालित, हाथ में पकड़े जा सकने वाला वेंटिलेटर विकसित किया है। पारंपरिक वेंटिलेटर के मुकाबले इसकी कीमत भी बहुत कम है। इस बैग वाल्व मास्क में लगे इलेक्ट्रानिक उपकरण को इस तरह प्रोग्राम किया गया है यह बार बार स्वचालित रूप से पंप होता रहता है।

राइस यूनिवर्सिटी की टीम ने डॉक्टरों और अन्य वैज्ञानिकों की मदद से इस वेंटिलेटर को विकसित किया है। ● स्रोत ट्विटर

अमेरिकी रक्षा विभाग भी हुआ मुरीद

प्रोफेसर वेटरग्रीन ने कहा कि हमारे उपकरण से रक्षा विभाग भी प्रभावित है। इधर-उधर ले जाने में आसान होने के कारण यह सबका ध्यान आकर्षित कर रहा है। उम्मीद है रक्षा विभाग भविष्य में इसे नौसेना में इस्तेमाल करने की इजाजत दे सकता है।

हाथ में लेकर भी लिया जा सकता है काम

इस वेंटिलेटर को विकसित करने वाली टीम के सदस्य प्रोफेसर वेटरग्रीन ने बताया कि यह बिजली से चलने वाला स्वचालित उपकरण है। यह उन लोगों के लिए नहीं जिनकी हालत बहुत गंभीर है, बल्कि उनके लिए है जिनको सांस लेने में दिक्कत है। इन मास्क को मरीजों को राहत देने के लिए इमरजेंसी मेडिकल स्टाफ हाथ में भी लेकर चल सकता है। लेकिन, हाथ से इसे कुछ मिनट तक ही दबाया जा सकता है। जिन मरीजों की हालत में सुधार हो रहा हो, उन्हें पारंपरिक वेंटिलेटर से हटाकर इस उपकरण पर शिफ्ट किया जा सकता है।

वेंटिलेटर की बढ़ी मांग का नतीजा

अमेरिका में इस बीमारी का व्यापक प्रकोप होने से अस्पतालों में संसाधनों की किल्लत हो गई है। मरीजों की भारी तादाद के आगे वेंटिलेटर भी बहुत कम पड़ रहे हैं। मेडिकल उपकरण बनाने वाली फिलिप्स समेत कई कंपनियों ने अपनी सप्लाई बढ़ाने के लिए कमर कसी है। लेकिन, जिस तेजी से मरीज बढ़ रहे हैं और इन उपकरणों की आपूर्ति शायद नहीं हो पाएगी। इस सूरत में यह उपकरण बड़े काम का साबित हो सकता है।

राइस विवि व मीट्रिक टेक्नोलॉजीस का साझा उपक्रम

टेक्सास स्थित राइस यूनिवर्सिटी और कनाडा की वैश्विक हेल्थ डिजाइन फर्म मीट्रिक टेक्नोलॉजीस ने मिलकर स्वचालित बैग वाल्व मास्क वेंटिलेशन यूनिट तैयार की है। इसकी लागत 300 डॉलर से भी कम है। मरीजों के इलाज के दौरान यह बहुत कारगर है। दुनिया भर में इसे ऑनलाइन बिक्री के जरिये उपलब्ध कराने की दिशा में दोनों संस्थाएं योजना तैयार कर रही हैं।

नासा व केनेडी को सम्मान देने के लिए टीम को दिया अपोलो नाम

यह उपकरण विकसित करने वाली टीम को 'अपोलो बीवीएम टीम' का नाम दिया गया। बेयर कॉलेज के इमरजेंसी मेडिसिन विभाग, राइस यूनिवर्सिटी में बायोइंजीनियरिंग विभाग और मीट्रिक टेक्नोलॉजीस से संबद्ध भारतीय मूल के रोहित माल्या ने यह नाम दिया है। उन्होंने राइस विवि के नासा से पुराने रिश्तों व पूर्व राष्ट्रपति राष्ट्रपति जेएफ केनेडी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए ऐसा किया।

दो साल पहले दी थी प्रेरणा

इस उपकरण को विकसित करने के लिए रोहित माल्या ने यूनिवर्सिटी के छात्रों को दो साल पहले प्रेरणा दी थी। रोहित ने बताया कि एक बार ह्यूस्टन के क्वाई रिवर क्रिश्चियन अस्पताल में परिचारकों को मरीजों को घंटों तक बैग मास्क से सांस देते देखा था। जिसके बाद उनके दिमाग में स्वचालित वेंटिलेटर बनाने का विचार आया था। (स्रोत-प्रेट्र)

आठवां नवरात्र

नियमों का पालन करें, माता वैष्णो देवी कल्याण करेंगी

देवी पूजा घर में

जासं, कटड़ा : कोरोना वायरस के बढ़ते खतरे के बीच विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल माता वैष्णो देवी के मुख्य पुजारी अमीर चंद ने लोगों से अपील की कि सरकार की ओर से जारी किए गए नियमों का पूरी तरह पालन करें। इस समय माता वैष्णो देवी के भवन पर कोरोना वायरस से पूरे विश्व को मुक्ति दिलाने के लिए विशेष प्रार्थना की जा रही है। कहा, यह समय संकट की घड़ी जरूर है, लेकिन घबराने की जरूरत नहीं। नवरात्र चल रहे हैं, हमें पूरी उम्मीद है कि मां वैष्णो देवी सभी का कल्याण करेंगी।

मां वैष्णो देवी के मुख्य पुजारी अमीर चंद ● जागरण

मुख्य पुजारी ने कहा कि देश से कोरोना वायरस का भय और कोहराम तभी खत्म होगा जब सभी नियमों का पालन करेंगे। सभी अपने-अपने घरों में ही रहें और अपने परिवार को जागरूक करने के साथ ही अन्य लोगों को भी सचेत करें। उन्होंने कहा कि वैष्णो देवी की यात्रा बंद है, लेकिन भवन पर सुबह और शाम होने वाली दिव्य आरती में विशेष पूजा-अर्चना की जा रही है, ताकि मां की कृपा सभी पर बने रहे। इसके अलावा भवन पर जारी शतचंडी महायज्ञ में भी देश के साथ पूरे विश्व को कोरोना वायरस से मुक्ति दिलाने के लिए आहुतियां डालकर मां भगवती से प्रार्थना की जा रही है। भवन पर भी सभी पुजारी सरकार की ओर से जारी दिशा-निर्देशों का पूरा पालन करते हैं। आप भी कीजिए।

श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की ओर से दिव्य आरती और शतचंडी महायज्ञ का लाइव प्रसारण करने की व्यवस्था भी की गई है, ताकि घर बैठकर श्रद्धालु इसमें शामिल हो सकें और एक साथ पूरा देश मां से विश्व कल्याण की प्रार्थना कर सकें।

टीवी पर रामायण और महाभारत के बाद अब चाणक्य की बारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

अपने पुराने मोतियों से फिर निखरा दूरदर्शन, इस हफ्ते से उपनिषद गंगा व शक्तिमान भी दिखाया जाएगा

कोरोना लॉकडाउन में लोगों को घर में ही भरपूर मनोरंजन का जरिया उपलब्ध कराने की पहल के तहत रामायण और महाभारत धारावाहिकों की दूरदर्शन पर वापसी ने अचानक बड़ी संख्या में दर्शकों को डीडी चैनलों की ओर मुखातिब कर दिया है। इन दोनों पौराणिक धारावाहिकों के साथ कुछ दूसरे पुराने लोकप्रिय सीरियलों की लोकप्रियता को देखते हुए प्रसार भारती अगले दो-तीन दिनों में दूरदर्शन के सुनहरे दौर के करीब आधा दर्जन और चर्चित धारावाहिकों का प्रसारण करने जा रही है।

सूचना-प्रसारण मंत्रालय की हरी झंडी मिलने के बाद दूरदर्शन इसी हफ्ते जिन चर्चित धारावाहिकों का प्रसारण शुरू करेगा, उनमें अभिनेता सह निर्माता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी का बेहद चर्चित धारावाहिक चाणक्य है। पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित एक और धारावाहिक उपनिषद गंगा का भी प्रसारण होगा। इसके अलावा बच्चों में जबरदस्त लोकप्रिय रहा मुकेश खन्ना का शक्तिमान, लोकप्रिय हास्य धारावाहिक श्रीमान-श्रीमती और कृष्णा कली जैसे सीरियलों का प्रसारण भी किया जाएगा।

लॉकडाउन के दो दिन बाद से ही दूरदर्शन के नेशनल चैनल पर रामायण रोजाना दो एपिसोड तो डीडी भारती पर महाभारत के भी दो एपिसोडों का प्रसारण हो रहा है। इसके अलावा ब्योमकेश बक्शी, सर्कस, हम हैं ना और तू तोता मैं मैना का भी प्रसारण हो रहा है। इस तरह दूरदर्शन के दोनों मुख्य चैनल पर सुबह से रात तक सभी उम्र वर्ग के लोगों के लिए मनोरंजन का विकल्प है।

बीते कई सालों से ज्यादा लोकप्रिय नहीं थे दूरदर्शन के कार्यक्रम : सरकारी प्रचार तंत्र का औजार बनने के बाद से दूरदर्शन के कार्यक्रमों की लोकप्रियता बीते कई सालों से नगण्य हो रही है। खासकर डिश टीवी के जरिये गांव-गांव तक चाहे मनोरंजन हो या न्यूज, निजी चैनलों की पैठ कहीं ज्यादा हो गई है।

दूरदर्शन के चर्चित धारावाहिक चाणक्य का एक दृश्य। फाइल

निजी मनोरंजन चैनल के कई लोकप्रिय कार्यक्रमों को भी टक्कर : सूचना-प्रसारण मंत्रालय से जुड़े सूत्रों के अनुसार दर्शकों के इस जबरदस्त रुझान के कारण निजी मनोरंजन चैनल के कई लोकप्रिय कार्यक्रमों को भी टक्कर मिल रही है। इसीलिए, कुछ लोकप्रिय निजी पे चैनलों ने अपने मासिक शुल्क को दो महीने के लिए मुफ्त भी कर दिया है। इस लिहाज से कोरोना वायरस लॉकडाउन ने अपने सुनहरे दौर के कार्यक्रमों के जरिये दूरदर्शन एक बार फिर दर्शकों को अपनी ओर खींच रहा है।

दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के निदेशक डॉ. एनएन माथुर ने दी सलाह

बाहर से आए लोगों की निगरानी जरूरी

डॉक्टर का कहना है

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए शारीरिक दूरी के अलावा कोई रास्ता नहीं है। इसी उद्देश्य से पूरे देश में लॉकडाउन लागू किया गया। दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के निदेशक डॉ. एनएन माथुर का कहना है कि विभिन्न राज्यों और महानगरों से जिस तरह बड़ी संख्या में लोग अपने गांव जा रहे हैं, उससे हालात और खराब हो सकते हैं। इसलिए कुछ सावधानियां बरतनी जरूरी हैं। बाहर से आने वाले लोगों को पहले निगरानी में रखना चाहिए। कम से कम 14 दिन तक। इस बीच किसी को बुखार, खांसी व सांस लेने में तकलीफ हो तो तत्काल जांच कराएं।

डॉ. एनएन माथुर

जागरूकता सबसे अहम

माथुर कहते हैं कि कोरोना महामारी को रोकने में जागरूकता सबसे जरूरी है। बगैर किसी जानकारी के लोग तरह-तरह की सूचनाएं फैला रहे हैं, इसलिए सरकार के दिशा-निर्देशों पर ही भरोसा करें और उनका पालन करें। अभी सबसे ज्यादा जरूरी यह है कि लोग घरों में रहें। परिवार के साथ समय बिताएं।

अलग कमरे में रहें खांसी-बुखार से पीड़ित

वे कहते हैं कि यदि हो सके तो खांसी और बुखार से पीड़ित लोग घर में भी एक अलग कमरे में रहें। उस कमरे में दूसरे लोग न जाएं। घर में साफ-सफाई का ध्यान रखें। फर्श को साफ रखें। बिस्तर की चादर और कपड़े रोज साफ करें।

बुजुर्गों के प्रति भी रहें ज्यादा सतर्क

वे कहते हैं कि अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। परिवार के बुजुर्गों के प्रति भी सतर्क रहें। मधुमेह, ब्लड प्रेशर, सांस व दिल की बीमारी से पीड़ित लोगों को विशेष सावधान रहने की जरूरत है। यदि मधुमेह है तो घर पर ही व्यायाम करें। इसके साथ ही दवा आदि से उसे नियंत्रित रखें। परेशानी होने पर डॉक्टर से सलाह लें।

प्रधानमंत्री कार्यालय में ट्वीट करते ही बुजुर्ग महिला की मदद को पहुंची सेना

जागरण संवाददाता, राजौरी : जम्मू संभाग के पुंछ में मंगलवार सुबह मानिक शर्मा ने प्रधानमंत्री कार्यालय में एक ट्वीट किया कि राजौरी जिले के कालाकोट तहसील के दूरदराज गांव दयाला में रहने वाली उसकी दादी की तबीयत काफी खराब है और उसे समय पर उपचार की सख्त जरूरत है। जैसे ही प्रधानमंत्री कार्यालय में यह ट्वीट पहुंचा। तुरंत इसकी जानकारी कालाकोट क्षेत्र में तैनात आरआर बटालियन को मिली। सेना ने मौके पर पहुंचकर महिला की मदद की। बता दें कि जानकारी मिलते ही आरआर बटालियन के अधिकारियों ने बटालियन के डॉक्टर व अन्य जवानों को एंबुलेंस के साथ दयाला गांव की तरफ रवाना कर दिया। मौके पर पहुंचे आरआर बटालियन के डॉक्टर ने पाया कि 85 वर्षीय सीता देवी को हृदय की तकलीफ है। इसके साथ उनका रक्तचाप में भी काफी तेज है। उसी समय डॉक्टर ने मौके पर बुजुर्ग महिला को प्राथमिक उपचार दिया।

पशुओं पर भी पड़ रही मार...

असम की राजधानी गुवाहाटी स्थित नवग्रह मंदिर के पास बंदरों को बिस्किट खिलाता एक पुलिसकर्मी। लॉकडाउन के कारण मनुष्य के आसपास रहने वाले पशु-पक्षियों को भी भोजन की किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। प्रेट्र

अखबार से कोरोना का कोई संबंध नहीं

अखबार सुरक्षित है

एहतियात के साथ-साथ शोध और इससे जुड़ी जानकारियों से रहें अपडेट

जेएनएन, नई दिल्ली

लगभग पूरे विश्व में पैर पसार चुके कोरोना वायरस से बचाव ही सुरक्षा का उपाय है। शासन-प्रशासन के साथ सहयोग कर देश को इस चुनौती से निबटने में मदद करें। यदि हम और आप ने मिलकर इसी तरह से जागरूकता दिखाई तो निश्चित ही कोरोना हारेगा। इसके लिए आप एहतियात के साथ ही दिन-प्रतिदिन होने वाले शोध और इससे जुड़ी जानकारियों से भी खुद को अपडेट करते रहें। कोरोना व इससे इतर विभिन्न जानकारियों के लिए अखबार सबसे अच्छा माध्यम है। फैलाए जा रहे भ्रम से दूर रहें। अखबार पूरी तरह से सुरक्षित है। विशेषज्ञ भी लगातार इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

आंख, कान और गला रोग का इलाज करने वाले चिकित्सकों के संगठन एसोसिएशन ऑफ ऑटोलैरिंगोलॉजिस्ट (एओआई) बिहार-झारखंड के अध्यक्ष डॉ. एसपी सिंह का कहना है कि कोरोना वायरस फैलने की बात पूरी तरह अफवाह है। जिन्हें जानकारी नहीं है, वे ही ऐसा भ्रम फैला रहे हैं। अगर ऐसा होता तो अब तक कई गुणा ज्यादा लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हो जाते।

डॉ. एसपी सिंह जागरण

उनका कहना है कि ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं मिला है कि अखबार पढ़ने वाले कोरोना वायरस से संक्रमित हुए हैं। इससे वायरस संक्रमण की आशंका बिल्कुल निराधार है। अखबार ही क्यों, किसी भी कागज के छूने से कोरोना का संक्रमण नहीं होता है, क्योंकि कागज कोरोना वायरस उत्पन्न नहीं करता। अगर कोई व्यक्ति इस संक्रमण की गिरफ्त में है और दूसरे लोगों के संपर्क में आया तो खतरा है। कोरोना किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से ही फैलता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) व अन्य संगठन इसका प्रचार कर रहे हैं कि लोग घरों से नहीं निकलें, क्योंकि लोगों के संपर्क में आने से ही यह संक्रमण फैल रहा है। सरकार ने लॉकडाउन भी इसलिए किया है। उन लोगों को ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है, जिनकी उम्र 50 वर्ष से ज्यादा है और वे कई बीमारियों से ग्रसित हैं। खासकर बीपी और मधुमेह के मरीजों को घर से बाहर नहीं निकलना है। अखबार पढ़ें, क्योंकि इसके माध्यम से सही और नई जानकारी से अपडेट होंगे।